बुद्धवर्ष २५४३, चैत्र पूर्णिमा, १८ अप्रैल, २००० वर्ष २९ अंक १०

धम्मवाणी

चरथ, भिक्खवे, चारिकं बहुजनहिताय बहुजनसुखाय लोकानुकम्पाय अत्थाय हिताय सुखाय देवमनुस्सानं।

महावग्ग-महापदानसुत्त (दी.नि.)

भिक्षुओ! चलते रहो। अनेक लोगों के भले के लिए, अनेक लोगों के सुख के लिए, लोक पर अनुकम्पा करते हुए, देव-मनुष्यों के कल्याणके लिए, अर्थ-हित-सुख के लिए विचरण करतेही रहो।

विश्व आर्थिक मंच पर विपश्यना

विश्व विपश्यना परिवार के प्रमुख आचार्य पूज्य गुरुदेव श्री सत्यनारायणजी गोयन्काजी को इस वर्ष २७ जनवरी से १ फरवरी, २००० तक डावोस, स्विट्जरलैंड में आयोजित **'विश्व आर्थिक मंच' (वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम)** के वार्षिक अधिवेशन में सम्मिलित होने के लिए आमंत्रित किया गया था। यह विश्व का ऐसा सर्वोच्च सम्मेलन माना जाता है, जिसमें राजनीति, व्यापार-व्यवसाय तथा प्रसार माध्यमों के क्षेत्र में विश्वस्तर के अग्रणी नेता एकत्र होकर संसार की ज्वलंत समस्याओं पर अनौपचारिक चर्चा करते हैं। इस मंच को विश्व की चोटी के शीर्षस्थ लोगों की सभा के रूप में माना जाता है। यह सम्मेलन इसलिए भी अधिक महत्त्वपूर्ण था क्योंकि नई सहस्राब्दी का यह पहला सम्मेलन था। इसमें ध्यान देने योग्य बात यह रही कि संसार में व्यापारिक संपन्नता एवं राजनैतिक प्रभाव के साथ-साथ आध्यात्मिकता को भी इसमें जोड़ा गया था।

पूज्य गुरुदेव ने इस सभा के विभिन्न सत्रों में भाग लिया और निम्न चर्चा-बिंदुओं पर अपने विचार व्यक्त किये : –

(१) धर्म का भविष्य (२) मृत्यु-चर्चा से परहेज क्यों? (३) क्रोध और उसका निराकरण, और (४) क्या प्राप्त सुख से बढ़कर भी कोई सुख है? सही सुख का अर्थ।

इस वर्ष इस सम्मेलन में लगभग ४० देशों के प्रधानमंत्री, राष्ट्राध्यक्ष एवं राजाओं ने भाग लिया, जिनमें अमेरिका, जर्मनी, इंगलैंड, स्विट्जरलैंड, स्पेन, मेक्सिको, मोजाम्बिक, इंडोनेशिया, दक्षिणी अफ्रीका, मिस्र आदि शामिल थे। अन्य अनेक देशों के उप-प्रधानमंत्री, उपाध्यक्ष, वित्त एवं वाणिज्य मंत्री भी आये। भाग लेने वालों में विश्व के सर्वाधिक धनी व्यवसायी, उद्योगपति तथा प्रसार माध्यमों के प्रभावशाली प्रमुखों के साथ-साथ शोधकर्ता वैज्ञानिक एवं विद्वान भी सम्मिलित हुए। पहली बार इस गण्यमान्य सभा में विपश्यना का संदेश पहुँचा।

२७ जनवरी के प्रातःकालीन सत्र का विषय था – आज के अर्थ-प्रधान और भौतिकता के आधीन विश्व में **धर्म का भविष्य**। इस चर्चा-सत्र में पू. गुरुदेव के साथ अन्य वक्ता इजराइल के यहूदी संगठन के अध्यक्ष, हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के एक प्रोफेसर, बेनलेहम २००० प्रोजेक्ट के मंत्री एवं प्रमुख संयोजक, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में अध्यात्म के एक प्रोफेसर थे। पूज्य गुरुदेव को सभी संप्रदायों एवं वर्गों के लोगों को विपश्यना सिखाने में मिली सफलता को देखते हुए उनसे प्रार्थना की गयी कि विभिन्न सांस्कृतिक मान्यताओं एवं रूढियों के मतभेदों से ऊपर उठकर किसी एक परंपरा की साधना का अभ्यास कैसे संभव हुआ? कृपया इसे विस्तार से बतायें!

पूज्य गुरुदेव ने इस बात पर जोर दिया कि सभी संप्रदायों की शिक्षा का सार – शील-सदाचार है, मैत्री है, करुणा है। कर्मकांड, दार्शनिक मान्यताएं और रूढ़ियां संप्रदायों के ऊपरी छिलके हैं; जिनकी निंदा भी नहीं करें परंतु इन्हें धर्म का सार समझने की भूल भी न करें।

उन्होंने समझाया कि शुद्ध धर्म की शिक्षा वर्गविहीन, सार्वजनीन, व्यावहारिक और आशुफलदायिनी है। शील, सदाचार की शिक्षा सभी संप्रदायों के लोगों को समान रूप से स्वीकार्य है। समाधि (चित्त की एकाग्रता) और प्रज्ञा (चित्त की शुद्धि) का अभ्यास भी सार्वजनीन है अतः सब को स्वीकार्य है। अपनी मान्यताओं से अत्यधिक लगाव होने और अन्य मान्यताओं व संस्कृतियोंके प्रति असहिष्णुता का भाव रखने से अशांति फैलती है। यदि धर्म के सार को अधिकाधिक महत्त्व दिया जाय तो मतभेद का कोई कारण नहीं रह जायगा। श्रद्धेय गोयन्काजी ने ऐसे व्यापक और उदार सार्वजनीन धर्म का प्रस्ताव किया जिसमें सभी संप्रदायों की शिक्षाओं में अंतर्निहित सार तत्त्वों को महत्त्व दिया जाय। विपश्यना के अभ्यास से साधक को ऐसे ही सार्वजनीन धर्म की प्राप्ति होती है, जिससे कि वह अपनी सांस्कृतिक परंपराओं को बनाए रखते हुए सुख-शांति का जीवन जी सकता है। ऐसे प्रयत्नों से ही धर्म के नाम पर होने वाली हिंसा एवं लड़ाई-झगड़े समाप्त होंगे। श्रोताओं ने बड़े ध्यान से श्रद्धेय गोयन्काजी को सुना और प्रसन्नता व्यक्त की।

२७ जनवरी की शाम को श्रद्धेय गोयन्काजी ने **मृत्यु की चर्चा से परहेज क्यों?** विषय पर हुए सत्र में भाग लिया, जिसमें उनके

साथ अन्य वक्ता इजराइल के एक यहूदी नेता, एक कैंसर-वैज्ञानिक और ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के एक प्रोफेसर थे।

इस विषय पर बोलते हुए पूज्य गुरुदेव ने प्रतिपादित किया कि मृत्यु की चर्चा से लोग इसलिए कतराते हैं क्योंकि वे मृत्यु से भयभीत रहते हैं। उन्होंने बताया कि कैसे एक विपश्यी साधक भीतर की सच्चाई को देखते हुए भयमुक्त होता है और निर्भीक अवस्था में मृत्यु का वरण करता है। अनेक विपश्यी साधकों के उदाहरण हमारे सामने हैं, जिन्होंने अत्यंत सजग, सचेत रह कर शांति भरे चित्त से मृत्यु को स्वीकार किया। जब कोई व्यक्ति नाम-रूप के अनित्य स्वभाव को स्वानुभव से जान लेता है तो उसका 'मैं' और 'मेरे' के प्रति चिपकाव कम होता है और जैसे-जैसे नाम-रूप के प्रति चिपकाव कम होता है वैसे-वैसे मृत्यु का भय भी कम होता जाता है। एक विपश्यी साधक प्रत्यक्ष अनुभव से जानता है कि हर क्षण उसकी मृत्यु और नया जन्म होता रहता है। (कुछ दिनों बाद ज्युरिक में जन्म-दिवस संबंधी प्रश्न का उत्तर देते हुए उन्होंने हँस कर कहा कि जब तुम्हें शरीर और चित्त के सत्य का अनुभव होगा तब **"हैप्पी बर्थ-डे टु यू"** कहने के बजाय **"हैप्पी बर्थ-मोमेंट टु यू"** कहना शुरू कर दोगे!)

२८ जनवरी की शाम के चर्चा-सत्र का विषय था – **क्रोध और उसका निराकरण** इस समय पूज्य गुरुदेव अकेले व्याख्याता थे।

आज की गतिशील एवं प्रतिस्पर्धात्मक जीवन-पद्धति में एक व्यक्ति बार-बार क्रोधित होता है। क्रोध के कारण पारस्परिक संबंध, व्यवसाय एवं आरोग्य में बाधा पहुँचती है। पूज्य गुरुदेव ने कहा कि प्रकृति का नियम ही ऐसा है कि क्रोध पैदा करने वाला व्यक्ति क्रोध का पहला शिकार स्वयं बनता है। क्रोध के कारण बेचैनी आती है। यह स्पष्ट है कि अनचाही होने पर क्रोध उत्पन्न होता है। मनचाही के होने में जब कोई बाधक बनता है तब क्रोध आता है। विश्व के सबसे सामर्थ्यवान व्यक्ति के जीवन में भी अनचाही होती रहती है और वह उसे रोकने में असमर्थ हो जाता है। क्रोध करना हानिकारक है, क्रोध से मुक्ति प्राप्त करनी चाहिए – यह सब समझते हुए भी क्रोध बार-बार सिर पर सवार होता रहता है। इस समस्या के समाधान के लिए क्रोध का सही कारण अपने भीतर ढूंढना होगा। चित्त को किसी अन्य आलंबन में लगा देने से केवल थोड़ी देर के लिए क्रोध से छुटकारा मिल सकता है। जबकि समस्या की जड़ तक पहुँचने के लिए क्रोध का सही ढंग से पर्यवेक्षण करना आवश्यक है। पूज्य गुरुदेव ने स्पष्ट किया कि विपश्यना एक ऐसी सरल विधि है जिससे मन में क्रोध जागने पर, तत्क्षण शरीर पर जागी हुई संवेदना और उसके अनित्य स्वभाव को तटस्थभाव से देखते-जानते हुए हम क्रोध से छुटकारा पा सकते हैं।

३१ जनवरी, सोमवार के सत्र में भी पूज्य गुरुदेव अकेले व्याख्याता थे। विषय था – **क्या प्राप्त सुख से बढ़ कर भी कोई सुख है? सही सुख का अर्थ।** कनाडा के टोरेंटो विश्व-विद्यालय के संस्कृति और उद्योग विभाग के प्रोफेसर कर्क को ने पू. गुरुदेव का परिचय कराया।

पू. गुरुदेव ने कहा, "हर एक व्यक्ति व राष्ट्र को भौतिक उन्नति एवं वैज्ञानिक प्रगति के लिए अवश्य प्रयत्नशील रहना चाहिए। लेकिन ये सही सुख तभी दे सकते हैं जबकि आध्यात्मिकता इनका आधारस्तंभ हो। असांप्रदायिक अध्यात्म (सेक्युलर स्पिरिच्युआलिटी) व्यवहार जगत की उन्नति में और अनुभव के स्तर पर यह जानने में सहायक होगा कि लौकीय सुख, ऐंद्रिय सुख, प्रसिद्धि और सत्ता – ये सब कुछ नश्वर हैं, परिवर्तनशील हैं अतः ये शाश्वत सुख नहीं दे सकते। विपश्यना एक ऐसी ही प्रायोगिक विधि है जिससे ऊपर-ऊपर के भौतिक सुखों के परे जाकर साधक सही सुख की अनुभूति कर सकता है। यह सुन कर सभी श्रोतागण बड़े प्रमुदित हुए तथा उन्होंने विपश्यना के बारे में अधिक जानकारी के लिए अनेक प्रश्न पूछे।

जब यूरोप के विपश्यी साधकों को पूज्य गुरुदेव के डावोस आने का पता चला तो वे इस बात के लिए आतुर हो उठे कि गुरुदेव वहां के केंद्रों पर भी पधारें। यूरोप में इंग्लैंड, स्विट्जरलैंड, जर्मनी, इटली, स्पेन, फ्रांस, बेल्जियम आदि देशों में विपश्यना केंद्र हैं परंतु स्वास्थ्य, बढ़ती उम्र तथा अत्यधिक व्यस्त कार्यक्रमों के कारण पू. गुरुदेव इन केंद्रों पर नहीं जा सके। फिर भी साधकों के लाभार्थ लौटते हुए उन्होंने स्विट्जरलैंड की ज्यूरिक नगरी में दो दिन का समय दिया ताकि स्विट्जरलैंड तथा पड़ोसी देशों के सहायक आचार्य, ट्रस्टीगण, धर्मसेवक तथा कुछ साधक उनसे प्रत्यक्ष मिल कर मार्गदर्शन ले सकें।

एक फरवरी की दोपहर पूज्य गुरुदेव ज्यूरिक पहुँचे। दो तारीख की सुबह यूरोप के विभिन्न देशों के लगभग २५० साधकों और धर्मसेवकों ने उनके साथ ध्यान किया और उनमें से अधिकांश ने प्रत्यक्ष मिल कर साधना संबंधी तथा केंद्रों के रख-रखाव संबंधी मार्गदर्शन प्राप्त किया।

दो फरवरी की सायं उन्होंने ज्यूरिक के कांग्रेस हॉल में दो सार्वजनिक प्रवचन दिये। पहला प्रवचन सायं ६ बजे लगभग ३०० गिने-चुने लोगों के लिए दिया गया, जिसमें पू. गुरुदेव ने विपश्यना के वैज्ञानिक पक्ष पर प्रकाश डाला।

दूसरा प्रवचन साढ़े सात बजे आरंभ हुआ जो कि आम जनता के लिए था। इस प्रवचन का जर्मन भाषा में अनुवाद भी चलता रहा। एक हजार की क्षमता वाला 'कांग्रेस हॉल' लगभग भरा हुआ था। यूरोप में किसी सार्वजनिक प्रवचन में इतने लोगों का आना बहुत बड़ी बात मानी जाती है, जो इस बात का संकेत है कि अधिकाधिक लोग विपश्यना की ओर आकर्षित हो रहे हैं। श्रोताओं में व्यवसाय तथा विद्वत्वर्ग के लोग प्रमुख थे। प्रवचन-पूर्व यह घोषणा की गयी थी कि एक घंटे के प्रवचन के बाद आधा घंटा प्रश्नोत्तर होगा। लेकिन श्रोताओं की रुचि इतनी अधिक थी कि प्रश्नोत्तर-सत्र एक घंटे तक चला। इन दो घंटों तक लोगों ने धैर्य एवं ध्यानपूर्वक धर्मसुधा का आस्वादन किया।

तीन फरवरी की प्रातः बौद्ध संगठन के प्रतिनिधि एवं स्विट्जरलैंड के अग्रणी समाचार पत्र के संवाददाताओं ने गुरुदेव से साक्षात्कार किया। वे यह जानना चाहते थे कि गुरुदेव जिस परंपरा में सिखाते हैं उसमें अनुशासन इतना कड़ा क्यों है? और यह परंपरा कुछ अन्य परंपराओं (जो बुद्ध की शिक्षा को ही सिखाने का दावा करती हैं) से भिन्न कैसे है?

पूज्य गोयन्काजी ने कहा कि वे अपने गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन द्वारा सिखायी गयी विधि के प्रति इसलिए आकर्षित हुए थे क्योंकि यह सार्वजनीन और वैज्ञानिक पद्धति है। भिन्न परंपरा की पृष्ठभूमि होते हुए भी उन्हें इस शिक्षा में कहीं कोई दोष नहीं दिखायी दिया था। और सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि धर्मपथ

पर चलना शुरू करते ही उन्हें बड़ा लाभ हुआ। उन्होंने कहा, "मेरी मातृभूमि बर्मा के प्रति मैं अत्यंत कृतज्ञ हूं क्योंकि वहां धर्म को शुद्ध रूप में संभाल कर रखा गया। बर्मा देश से प्राप्त यह अनमोल धर्मरत्न जिसे भी मिला, उसे कृतसंकल्प होना चाहिए कि वह इसे अपने शुद्ध स्वरूप में संभाल कर रखेगा। इस शुद्ध शिक्षा के परिणाम सारे विश्व में मिल रहे हैं। अतः इसकी शुद्धता बनाये रखने के लिए कड़ा अनुशासन अत्यंत आवश्यक है। यदि विपश्यना शिविरों में अनुशासन कमजोर हो गया तो शिक्षा भी शीघ्र ही विकृत हो जायगी। शिक्षा विकृत हो गयी तो इसके जो परिणाम आने चाहिए, वे नहीं आयेंगे और देर-सबेर यह लुप्त हो जायगी।

संवाददाता जानना चाहते थे कि पू. गुरुदेव अपने आप को उन साधकों से अलग क्यों रखते हैं जिन्होंने उन्हीं से विपश्यना सीखी है लेकिन अब बिना अनुमति के स्वयं सिखाने लगे हैं। उन्होंने कहा कि वे दो बातों का बहुत ध्यान रखते हैं –(१) धर्म का व्यवसायीकरण न हो, और (२) धर्मक्षेत्र में गुरु-शिष्य संबंधों की पवित्रता कायम रहे।

इसे समझाते हुए उन्होंने बताया, "धर्म अनमोल है। उसकी कोई कीमत नहीं हो सकती। जब कोई धर्म-शिक्षा का मूल्य लगाता है तब धर्म का बहुत बड़ा अवमूल्यन हो जाता है। धर्म का व्यवसायीकरण करने वालों के साथ मैं कैसे जुड़ सकता हूं?"

"कोई तथाकथित धर्माचार्य अपने शिष्य-शिष्याओं के साथ शरीर-संबंध रखे, यह बात मेरे लिए सर्वथा अमान्य है। मैं इससे कभी सहमत नहीं हो सकता। एक धर्माचार्य औरों को वासना से मुक्ति पाने का रास्ता बताता है। उसके लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि शिष्यों के साथ व्यवहार में वासना का लवलेश भी न हो। उनके साथ उसके संबंध करुणापूर्ण तथा मैत्रीपूर्ण ही हों। इन दो बातों में मैं कभी समझौता नहीं कर सकता।"

विभिन्न साधना पद्धतियों में कुछ फर्क तो होगा ही। लेकिन पू. गुरुदेव के अनुसार उपरोक्त दो बातें ऐसी हैं जिन्हें लेकर किसी भी बुद्धानुयायी को कभी भी समझौता नहीं करना चाहिए।

ज्यूरिक के दो दिन इस बात के प्रमाण सिद्ध हुए कि विपश्यना का डंका बज चुका है। अब विपश्यना ऐसे स्थानों तक पहुँच गयी है जहां कुछ दशक पहले तक शुद्ध धर्म के शब्द भी सुनने को नहीं मिलते थे। पू. गुरुदेव दस साल बाद यूरोप गये थे। इन दस वर्षों में धर्म का उत्तरोत्तर प्रसार होता गया है। जो बीज उन्होंने बड़ी सावधानी के साथ बोये थे और बड़े प्यार से उनकी रक्षा की थी, वे अब यूरोप के कई देशों में विपश्यना केंद्रों के रूप में विशाल वृक्ष बन गये हैं और भवरोग से पीड़ित अनेकों को धर्म की शीतल छांह दे रहे हैं।

धर्मपथ पर चल कर सभी मंगललाभी बनें और अपना कल्याण साधें! सब का मंगल हो!

जयपुर एवं दिल्ली की धर्म-यात्रा

पूज्य गुरुदेव एवं माताजी ने इस धर्मयात्रा की शुरुआत जयपुर में ७ मार्च को सायं राज्य सरकार के लगभग ४० उच्चतम अधिकारियों को संबोधित करते हुए की। ८ को धम्मथली विपश्यना केंद्र पर साधकों को विपश्यना दी। सायंकाल बिरला ऑडिटोरियम में सार्वजनिक प्रवचन हुआ, जिसका लगभग १५०० लोगों को लाभ हुआ। प्रवचन के पश्चात राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने सरकारी अतिथिगृह में पूज्य गुरुजी से भेंट करके शुद्ध धर्म की जानकारी प्राप्त की। ९ मार्च को पू. गुरुजी ने स्थानीय समाचार पत्रों के संवाददाताओं से साक्षात्कार में विपश्यना संबंधी जानकारी दी और सायं राजस्थान विश्व-विद्यालय में प्रवचन हुआ। इन सभी कार्यक्रमों का स्थानीय समाचार पत्रों में विवरण छपा। १० की प्रातः राजस्थान अधिकारी प्रशिक्षण संस्थान (ओ.टी.एस.) में राज्य सेवा के अधिकारियों को संबोधित किया।

जयपुर से पूज्य गुरुजी एवं माताजी 'धम्मसोत' विपश्यना केंद्र पहुँचे। इस नव निर्मित सर्व सुविधापूर्ण शांत एवं एकांत केंद्र पर पहला दस दिवसीय वि. शिविर चल रहा था। पूज्य गुरुजी ने साधकों को विपश्यना दी।

प्रतिभावान एवं सौम्य डॉ. विट्ठलदास मोदी

महात्मा गांधी के प्रभाव में आकर डॉ. मोदीजी ने गोरखपुर में जिस 'आरोग्य मंदिर' की स्थापना की, वह आज विश्व के प्रमुख प्राकृतिक चिकित्सा केंद्रों में अपना स्थान बना चुका है। इस चिकित्सालय के माध्यम से उन्होंने न केवल अनेकानेक रोगियों को रोगमुक्त किया बल्कि भविष्य में सुखी जीवन जीने का आधार भी दिया। प्राकृतिक चिकित्सा अन्य चिकित्सा पद्धतियों की जैसी हानिप्रद प्रतिक्रिया रहित होने के कारण आज पूरे विश्व में प्रतिष्ठित हो रही है। चिकित्सा के अतिरिक्त उन्होंने जिन पुस्तकों का सरल हिंदी भाषा में लेखन और कइयों का अनुवाद करके प्रकाशन किया वे सदियों तक लोक मंगल का कारण बनेंगी। 'आरोग्य' मासिक पत्रिका का संपादन व प्रकाशन करके उन्होंने पूरे चिकित्सा जगत को प्रभावित किया है। अपने अदम्य उत्साह एवं सौम्य स्वभाव के कारण प्राकृतिक चिकित्सा को पूरे देश में फैलाने में वे सहज सक्षम रहे। आज के भारत में जितने प्राकृतिक चिकित्सालय हैं, उनमें के अधिकांश चिकित्सक डॉ. मोदीजी से ही प्रशिक्षण पाए हुए हैं।

जैसे ही वे विपश्यना साधना के संपर्क में आए उन्होंने तत्काल समझ लिया कि यह मन के विकारों से मुक्ति दिलाने वाली नैसर्गिक मनोचिकित्सा पद्धति है, सांप्रदायिक अंधविश्वासों से सर्वथा विमुक्त है, भारत की प्राचीन नितांत वैज्ञानिक विद्या है और आशुफलदायिनी है। अतः इससे एकाकार होकर स्वयं साधना करते हुए इसके माध्यम से जनसेवा में जुट गए और विपश्यना के सहायक आचार्य नियुक्त हुए। कुछ समय बाद कुशीनगर के विपश्यना केंद्र की सेवा के लिए आचार्य नियुक्त हुए। उनकी प्रेरणा से अनेक साधकों ने विपश्यना शिविरों का लाभ उठाया।

८८ वर्ष की पकी हुई अवस्था में मृत्यु के तीन दिन पूर्व तक वे दूसरों के कष्ट दूर करने का ही प्रयत्न करते रहे। अंतिम समय में शरीर की अति दुर्बलता के कारण मूर्छित अवस्था रही परंतु किसी प्रकार की पीड़ा का कोई चिह्न नहीं दिखायी दिया। दोपहर को पूज्य गुरुजी ने काठमाडौं (नेपाल) से फोन पर उन्हें मंगल मैत्री दी और उसी रात को ११ बजे के बाद उन्होंने शरीर छोड़ दिया।

इस प्रकार उन्होंने अपना मानव जीवन सर्वथा सफल बना लिया। उनसे प्रेरणा पाकर सभी लोग आत्म-मंगल एवं सर्वमंगल के कार्य में लगें, यही उनके प्रति सही श्रद्धांजलि होगी।

दूसरे दिन वे इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में संवाददाताओं को भेंट-वार्ता दी। इसमें प्रिंट एवं टी.वी. प्रसार माध्यमों के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

लाजिक स्टाट फार्म पर आयोजित एक दिवसीय शिविर में ७०० से भी अधिक साधकों ने भाग लिया, जिसकी आनापान एवं मैत्री पूज्य गुरुजी ने दी। शिविर-समापन के प्रवचन में पूज्य गुरुजी ने कहा कि साथ-साथ तपने का विशेष सुख होता है। सामूहिक साधना के महत्त्व को समझाते हुए उन्होंने हाल ही में म्यंमा के विशाल श्वेडगोन पगोडा के प्रांगण में सूर्योदय के पूर्व ७०० से भी अधिक साधकों की सामूहिक साधना के अपूर्व अनुभव की याद दिलायी। सा. साधना एवं एक दिवसीय शिविरों के महत्त्व पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजन सभी नगरों एवं कस्बों में होने चाहिए। धर्मसेवा का माहात्म्य बतलाते हुए उन्होंने कहा कि इससे औरों की सेवा तो होती ही है, अपनी व्यक्तिगत साधना को भी बहुत बल मिलता है।

आगामी दिनों में उन्होंने जिन श्रोताओं को प्रवचन दिये उनकी विभिन्नता से यह प्रत्यक्ष दीखता है कि विपश्यना समाज के सभी वर्गों में पहुँच चुकी है। एक ओर उन्होंने पुलिस अकादमी में वरिष्ठ अधिकारियों सहित ५०० पुलिस कर्मियों को धर्मदेशना दी तो दूसरी ओर तिहाड़ जेल में बंदी भाइयों को, जिनमें अनेक विपश्यी साधक थे, धर्मप्रवचन दिया। गुरुजी ने सांसदों एवं उनके परिवारजनों के लिए भी एक प्रवचन दिया।

१६, १७ व १८ मार्च की सायं दिल्ली के तालकटोरा इनडोर स्टेडियम में तीन दिवसीय प्रवचन शृंखला का आयोजन किया गया था, जिसका बड़ी संख्या में लोगों ने लाभ लिया। प्रतिदिन उसी स्थान पर प्रवचन के पहले लगभग ५०० साधकों की सामूहिक साधना भी हुई।

१८ मार्च को प्रातः पूज्य गुरुजी ने केंद्र सरकार के लगभग १५० वरिष्ठ (आई.ए.एस., आई.पी.एस इत्यादि) अधिकारियों को संबोधित करते हुए कहा कि विपश्यना से उन्हें अपनी जिम्मेवारी अधिक तत्परतापूर्वक निभाने में मदद मिलेगी क्योंकि विपश्यना के अभ्यास से निर्णय-क्षमता बढ़ती है, काम करने का उत्साह बढ़ता है और मन तनावमुक्त हो, शांत एवं प्रसन्न रहता है।

दूहा धरम रा

चल साधक चलता रवां, जन सेवा रै काम।
इब क्यां को आराम है, इब क्यां को विसराम॥
जन जन री सेवा करां, यो जीवन रो ध्येय।
यो ही म्हारो श्रेय है, यो ही म्हारो प्रेय॥
चल भिक्खू चलता रवां, अबै कठै विसराम।
बहुजन हित-सुख कारणै, है आराम हराम॥
धरम धरा स्यूं फिर बवै, सुद्ध धरम री धार।
एक बार फिर स्यूं हुवै, सकल जगत उद्धार॥
डंको बाज्यो धरम रो, गूंज्यो देस बिदेस।
जन जन रा दुखड़ा मिटै, कटै करम रा क्लेस॥
सुद्ध धरम ऐसो जगै, अंतर निरमळ होय।
जनमां रा बंधन कटै, मुक्ति दुखां स्यूं होय॥

मेसर्स गो गो गारमेंट्स
३१ -४२, भांगवाड़ी शॉपिंग आर्केड,
१ला माला, कालबादेवी रोड, मुंबई - ४००००२.
☎ ०२२- २०५०४१४
की मंगल कामनाओं सहित

दोहे धर्म के

आयी पुनः विपश्यना, लिये धरम की रीत।
सबके प्रति मैत्री जगी, जगी प्रीत ही प्रीत॥
ज्यों ज्यों अपने चित्त का, मैल उतरता जाय।
त्यों त्यों निर्मल चित्त में, प्यार उमड़ता जाय॥
जगे धर्म संवेग मन, देख दुखी संसार।
जन-जन के प्रति जग उठे, सेवा, करुणा, प्यार॥
सब दुखियारों को मिले, विपश्यना का पंथ।
सब के मन के दुख मिटें, मंगल जगे अनंत॥
जैसे मेरे दिन फिरे, सब के दिन फिर जायँ।
जैसे मेरे दुख मिटे, सबके दुख मिट जायँ॥
बाकी सारी जिंदगी, धरम हेतु लग जाय।
अंतिम क्षण तक धरम की, सेवा होती जाय॥

मेसर्स मोतीलाल बनारसीदास
• महालक्ष्मी मंदिर लेन, ८ महालक्ष्मी चैंबर्स, २२ वार्डन रोड, मुंबई-४०००२६.
☎-४९२३५२६, • सनस प्लाजा, शॉप ११-१३, १३०२, सुभाष नगर, पुणे-४११००२.
☎-४८६१९०, • दिल्ली-२९११९८५, • पटना- ६७१४४२, • वाराणसी-३५२३३१,
• बैंगलोर-२२१५३८९, • चेन्नई- ४९८२३१५, • कलकत्ता २४३४८७४
की मंगल कामनाओंसहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२४०३, दूरभाष : (०२५५३) ८४०८६, ८४०७६.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, ६९- बी रोड, सातपुर, नाशिक-४२२००७. **बुद्धवर्ष २५४३, चैत्र पूर्णिमा, १८ अप्रैल, २०००**

वार्षिक शुल्क रु. २०/-, विदेश में US $ 10
आजीवन शुल्क रु. २५०/-, " US $ 100

'विपश्यना' रजि. नं. १९१५६/७१. Concessional rates of Postage under Regn. No. AR/NSM-46/2000, Licenced to post without Prepayment

Posting day- **Purnima of Every Month**
Posted at Igatpuri-422403, Dist. Nashik

If not deliverd please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२४०३
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
दूरभाष : (०२५५३) ८४०७६
फैक्स: (०२५५३) ८४१७६
Website: www.vri.dhamma.org
E-mail: <dhamma@vsnl.com>